Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

बनारस परंपरा के सिद्धहस्त कलाकार पंडित बड़े रामदास मिश्र का सांगीतिक योगदान

GURJEET SINGH[1] & DR. SHUCHISMITA SHARMA[2]

1 Research Scholar, Music and Dance Department, Kurukshetra University, Kurukshetra
2 Professor, Music and Dance Department, Kurukshetra University, Kurukshetra

सार

भगवान शिव के डमरू से उत्पन्न नाद से गुंजायमान काशी के कण-कण में पवित्र संगीत विद्यमान है। इसको वाराणसी, बनारस, शिव नगरी आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। यदि इसको संगीत नगरी भी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की मिट्टी, हवा, जल, पहनावा, खानपान एवं दैनिक व्यवहार में संगीत का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। इस धरती का बच्चा-बच्चा संगीत की किसी न किसी विधा का पुजारी दिखाई देता है। पवित्र गंगा नदी के किनारे बसे इस नगर की आबोहवा के संगीत में निहित रस पग-पग पर अपने होने का आभास कराता है। प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खान हमेशा कहते थे-जिसका रस सदा बना रहे वही बनारस है। इस मिट्टी ने अनेक संगीत साधकों एवं तपस्वियों को अपनी गोद में पाला, जिन्होंने अपनी कला के बलबूते पर भारतीय संगीत को आध्यात्मिकता में रंगकर करके पूरे विश्व में इसका प्रचार-प्रसार किया। इस भूमि पर जन्में कलाकारों की सूची बहुत विस्तृत है। इनमें से एक प्रसिद्ध नाम पंडित बड़े रामदास मिश्र जी का है। इन्होंने नाद एवं संगीत साधना को अपने जीवन में अपनाकर बनारसी संगीत को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने का कार्य किया।जिस प्रकार ये चारों पट की गायकी में पूर्ण पटु एवं विद्वान गायक थे, उसी प्रकार इनकी नायकी प्रतिभा भी विलक्षण थी। इनके विषय में किवदंती प्रसिद्ध रही है कि एक दिन बाबा विश्वनाथ ने इनको स्वप्न में आदेश दिया कि स्वयं की रचनाएं ईश्वर को समर्पित करो। तत्पश्चात् इन्होंने अपने आराध्य का ध्यान स्मरण करते हुए सरल से सरल पदों से लेकर प्रसिद्ध रागों एवं तालों में अनेक उत्कृष्ट एवं विद्वतापूर्ण चमत्कारिक रचनाएं बनाई, जो संगीत जगत की अमूल्य निधि हैं।

भूमिका

काशी के संगीत इतिहास में घरानेदार संगीतज्ञों में अत्यंत लोकप्रिय श्री बड़े रामदास मिश्र हिंदू कुल गौरव, चारों पट की गायकी में सुदक्ष, निराभिमानी व उदारवान, जीवनपर्यन्त माँ सरस्वती के आराधक, नित्यर्सन, रससिद्ध एवं संतनायक के रूप में काशी की मूर्धन्य विभूतियों में अग्रगण्य गायक के रूप में याद किए जाते हैं। इनका जन्म काशी में संवत् 1933 माघकृष्ण षटतिला एकादशी, मंगलवार 23 जनवरी, सन् 1877 ईस्वी को प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में एक संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। आपके पिता शिवनंदन मिश्र और माता भाग्यवती देवी थे। आपकी सांगीतिक रुचि देखकर आपके पिता जी आपको उस समय के बेतिया घराने के सर्वश्रेष्ठ विद्वान एवं मूर्धन्य ध्रुपद गायक गायक श्री जयकरण मिश्र जी के पास ले गए, जहाँ आप की विधिवत शिक्षा प्रारंभ हुई। बड़े रामदास मिश्र ने उनसे चार-पाँच सौ ध्रुपद-धमार की बंदिशें, ख्याल, टपख्याल, टप्पा, होरी एवं विभिन्न प्रचलित-अप्रचलित रागों एवं तालों की अनूठी बंदिशों को सीखा और कंठस्थ किया। दस वर्ष की आयु से तीस वर्ष की आयु तक आते-आते इनका दैनिक संगीत अभ्यास का क्रम 18 से 20 घंटे प्रतिदिन का हो चुका था। नियमित साधना का यह अटूट कर्म जीवनपर्यंत चलता रहा। इस प्रकार की कठोर साधना और परिश्रम से शीघ्र ही यह देश की प्रसिद्ध रियासतों, रजवाड़ों, नवाबों, ताल्लुकेदारों व जमींदारों में चर्चित एवं निमंत्रित होने लगे।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

इनके पदों में कोमलता, लालित्य एवं समर्पण आदि भावों के साथ-साथ ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था, जगत की नश्वरता, नादब्रह्म की शाश्वतता के प्रति पूर्ण समर्पण आदि स्वयं प्रकट होता है। इनके सभी पद भगवत्ता के लिए भगत के अटूट प्रेम एवं आस्था से परिपूर्ण, अश्लीलता रहित, मर्यादित, शिष्ट एवं साहित्यिक ज्ञान के परिचायक हैं तथा सभी पदों में 'रामदास के मोहन प्यारे' अथवा 'रामदास के गोविंद स्वामी' अवश्य जुड़ा है। ये ध्रुपद-धमार, ख्याल, टपख्याल, सादरा, चतुरंग तिरवट एवं तराना से लेकर टप्पा, ठुमरी ग़ज़ल, भजन होली तथा दादरा तक गाकर सामान्यजनों के साथ विशिष्टजनों को भी अपना घोर प्रशंसक बना लेने वाले काशी के अनुपम लोकप्रिय गायक थे।

पंडित बड़े रामदास मिश्र जी आड़ापंज सूलफाक, सवारी, फरोदस्त लीलाविलास, रुद्र, लक्ष्मी-गणेश, शिखर, ब्रह्म आदि कठिन अप्रचलित तालों को भी सामान्य लोकप्रिय प्रचलित तालों की भाँति अपनी मनोमुग्धकारी गायकी से सहजतापूर्वक घंटों तक श्रोताओं के मानस-पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले साधारण विद्वान गायक थे। सजातीय, विजातीय, ऊँच-नीच, निर्धन, धनी, सामान्य, विशेष आदि भेदभाव की मूढ़ता से कोसों दूर आप समाज के हर वर्ग के होनहार एवं प्रतिभाशाली संगीत जिज्ञासु सामान्य बालकों को अनेक बालसुलभ प्रलोभन से स्नेहपूर्ण आकर्षित कर अपने पास बुलाकर संगीतविद्या का दान देने वाले आप औधड़दानी संत गायक थे, जिसके कारण इनके शिष्यों में समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व मिलता है। अपनी कला प्रतिभा से प्रतिष्ठित इनके शिष्य भारतवर्ष के सभी प्रांतों में बसकर इनके सुयोग्य शिष्य होने का नाम सार्थक कर रहे हैं। इनके अनेक सुप्रसिद्ध शिष्यों ने गायन, सारंगीवादक, सितारवादक, शहनाईवादक वायलिनवादक, तबलावादक आदि सभी श्रेणियों में इनके द्वारा प्रदत संगीत शिक्षा एवं अपनी संगीत साधना से संगीत जगत् में काशी का गौरव बढ़ाकर विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की।

इनकी अटूट शिष्य श्रृंखला में इनके उत्तराधिकारी भतीजे श्री हरिशंकर मिश्र, श्री गणेश प्रसाद मिश्र (बंदूजी), श्री रामसेवक मिश्र 'सजीले जी', श्री महादेव प्रसाद मिश्र, बद्री प्रसाद मिश्र, श्री प्रचंड देव 'चाँप', श्री रामू मिश्र, जाल्पाप्रसाद मिश्र, राजेश्वर प्रसाद मिश्र, धर्मनाथ मिश्र, रामेश्वर प्रसाद मिश्र, अमरनाथ-पशुपतिनाथ 'मिश्रबंधु', सिद्धेश्वरी देवी, नंदलाल, हनुमान प्रसाद मिश्र, गंगाप्रसाद मिश्र, उमादत्त मिश्र, रामशास्त्री, राजन-साजन मिश्र आदि देशव्यापी ख्यातिप्राप्त कलाकारों के अतिरिक्त सैकड़ों शिष्य-प्रशिष्य देश कोने-कोने में संगीत जगत की सेवा करते हुए अपने गुरु के नाम को अमर कर रहे हैं। पंडित बड़े रामदास द्वारा निर्मित रचनाओं के विविध विषय उनकी अद्भूत प्रतिभा के परिचायक हैं, जिनके फलस्वरूप इनकी रचनाओं की लोकप्रियता तथा आदर आज भी संगीत-साधकों के हृदय में विद्यमान है।

पंडित बड़े रामदास निर्मित रचनाओं में विषय-विविधता का वर्णन

पंडित रामदास द्वारा रचित ख्याल की बंदिशों के वर्णित विषयों में ईश-स्तुति एवं भक्तिपरक उद्गार से परिपूर्ण काव्य बहुतायत मिलता है। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है:-

1. पंडित रामदास द्वारा रचित रचनाओं में वर्णित स्तुतियां एवं उत्सव:-

(क) राम स्तुति

राग पूरियाधनाश्री (तीन ताल)

स्थायी- सुमिरन कर मन राम नाम को।
और नहीं जग कोई काम को।।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

अन्तरा- जो ध्यावत मन इच्छा पूरत।

रामदास भजु राधे-श्याम को।।

प्रस्तुत रचना का भाव है कि-हे मन राम नाम का जाप करो। इस संसार में कोई काम नहीं आएगा। जो सच्चे मन से श्री राम का ध्यान करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इस प्रकार रामदास जी कहते हैं कि-हे मनुष्य तुम प्रभू का नाम सुमिरन करो।।

(ख) शिव स्तुति

राग श्याम कल्याण (तीन ताल)

स्थायी- शंकर शिवदानी भोलानाथ,

त्रिभुवन के स्वामी विश्वनाथ।

अन्तरा- अखिलेश्वर विश्वेश्वर महेश्वर प्रणतपाल,

रामदास शरण आए आशुतोष शिवानाथ।

प्रस्तुत रचना में भगवान शंकर के नामों का उल्लेख किया गया है, जो कि तीनों लोकों के स्वामी हैं। जैसे-शंकर, शिवदानी, भोलानाथ, त्रिभुवन, विश्वनाथ, अखिलेश्वर, विश्वेश्वर, महेश्वर, प्रणतपाल, आशुतोष आदि। भक्त रामदास आपकी शरण में आया है। अतः हे कृपालु कृपा करो।

(ग) कृष्ण स्तुति

राग गुर्जरी तोडी (तीन ताल)

स्थायी- फोरी रे मोरी कान्ह गगरिया,

डगर चलत बरजोरी रे।

अन्तरा- रामदास के तुम हो स्वामी,

रोकत है मोरी आन डगरिया।

इस रचना में गोपियों के साथ कान्हा जी की रास लीला का वर्णन किया गया है। श्री कृष्ण द्वारा उनकी मटकी फोड़ने एवं रास्ते में उनके साथ हुई छेड़छाड़ का मनोहारी दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

(घ) दुर्गा स्तुति

राग- दुर्गा (तीन ताल)

स्थायी- आदि शक्ति जगदंबा भवानी,

नमो नमो महषिासुर मर्दिनी।

अन्तरा- तू ही वैष्णवी तू ही रूद्राणी, तू ही शारदा अरू ब्रहाणी।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

रामदास नित शरण तिहारी, सकल जगत की भव भय हरणी।।

प्रस्तुत स्तुति का भाव यह है कि-हे माँ! आदि शक्ति महिषासुर नामक असुर का वध करने वाली जगदम्बे, मैं आपको शत् शत् नमन करता हूँ। आप ही वैष्णवी, रूद्राणी, शारदा एवं ब्रह्माणी हैं। सम्पूर्ण जगत् को भयमुक्त करने वाली देवी, मैं नित्य प्रति आपके चरणों में वन्दना करता हूँ।

(ड.) मंगल उत्सव

राग पूर्वी (तीन ताल)

स्थायी- मोतियन माँग सँवारों सजनी,

आज रंगीला ब्याहन आया।

अन्तरा- मंगल गावो चोक पुरावो, मंदल बजावो धूम-धाम सों

या ही में आनन्द भयो है, रामदास मन भायों री सजनी।

प्रस्तुत बंदिश में विवाह के अवसर पर मनाए जा रहे हर्षोल्लास का वर्णन किया गया है। यहाँ नायक-नायिका का अन्तर्संवाद दृष्टिगोचर हो रहा है। यथा-हे सजनी तुम अपनी माँग को मोतियों से सजाओ। आज रंगीला (पति) ब्याहने आया है। मंगल गान करो, चोक पुराओ, धूम-धाम से साज बजाओ। इस प्रकार इस शुभ अवसर पर अति आनन्द की प्राप्ति हो रही है।

पंडित रामदास द्वारा रचित रचनाओं में वर्णित राग

(क) राग-शंकरा (सूल ताल)

स्थायी- शंकर हो दयालु करहुँ कृपा हम पर,

दीन हुँ दीनन को दीनानाथ तुम हो।

अन्तरा- रामदास जन को हरहु दुख बेगि अब,

क्षमहुँ अपराध अब शरण शरण शरण हो।

इस राग में भाव इस प्रकार है कि-हे भगवान शंकर आप अत्यंत दयालु हैं। मैं दीनों का दीन हुँ और आप दीनानाथ हंै। हे प्रभू अपने शरणागतों के अपराध क्षमा करो। उनके सारे दुःख दूर करो।

(ख) राग शंकरा (एक ताल)

स्थायी- शंकर हे। दया करो, हम पर त्रिपुरारी।

बास तो कैलाश कीन्हों, कर त्रिशुल डमरूधारी।

अन्तरा- बहुतन को दियो ज्ञान, अनधन अरू विद्या।

रामदास के स्वामी, शरण में तिहारी।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

इस राग में वर्णित है कि-हे भगवान शंकर हम पर दया करो। हे त्रिपुरारी आप कैलाश पर्वत पर वास करते हंै। आपके हाथों में त्रिशुल और ड़मरू शोभायमान हो रहा है। अनेक लोगों को आपने धन-संपति एवं विधा दी है। रामदास जी कहते हैं कि हे स्वामी मैं आपकी शरण में हुँ। मुझपे भी कृपा करो।

(ग) राग मेघ (तीन ताल)

स्थायी- आयो गरजत बादरवा,

चहुँ और से उमड़ि-घुमड़ि,

अतहि प्रचंड़ गहरायो।

अन्तरा- ध ध ध लाग दमकत दामिनियां, मोरिला कराय कोयल कुंकार।

पपीहा पुकार रामदास को, दीजे दरस हरि हर हरि हर।

प्रस्तुत राग में बादलों का चारों दिशाओं से गर्जना करते हुए आना, अति प्रचण्ड वर्षा करना, बिजली का चमकना आदि द्वारा वर्षा ऋतु का वर्णन किया गया है तथा मोर, कोयल, पपिहा इत्यादि पक्षियों की तरह रामदास घबराकर अपने प्रभू को यादकर रहे हैं कि-हे प्रभू दर्शन देकर मुझे भी भय मुक्त करो।

(घ) राग-चंद्रकौंस (तीनताल)

स्थायी- मतवारो ठाढ़ो मग रोकत देखो,

जमुना जल भरन कैसे जाऊँ।

अंतरा- ऐसो चंचल निठुर बनवारी विनती करत मैं,

तो हारी हारी 'रामदास' चरण कमल पर बलि-जाऊँ।।

स्थायी

ग	म	धनि	सांगं	सानि	धनि	धम	गम	ध	म	ग	म	ग	सा
म	त	वाऽ	ऽऽ	रोऽ	ठाऽ	ऽऽ	ढोऽ	म	ग	रो	ऽ	क	त
		0					3						

नि	सा	-	-	ग	म	ध	म	ध	नि	ध	नि	सांगं	सानि	धनि	धम	गम	गसा
दे	खो	ऽ	ऽ	ज	मु	ना	ज	ल	भ	र	न	केऽ	ऽऽ	सैऽ	ऽऽ	जाऽ	ऊँऽ
2				0				3				x				2	

अन्तरा

ग	म	ध	म	ध	नि	ध	नि	सां	नि	सां	सां	ध	नि	सां	मं
ऐ	सो	चं	च	ल	नि	ठु	र	ब	न	वा	री	वि	न	ती	क
0				3				x				2			

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

गं	गं	सां	सां	सां	गं	सां	नि	सां	नि	ध	नि	ध	म	ध	म
र	त	मैं	तो	हा	ऽ	री	हा	ऽ	री	रा	ऽ	म	दा	ऽ	स
0				3				x				2			
ग	म	ध	म	ध	नि	सां	सां	सांगं	सानि	धनि	धम	गम	गसा	ग	म
च	र	ण	क	म	ल	प	र	बऽ	लिऽ	बऽ	लिऽ	जाऽ	ऊँऽ	म	त
0				3				x				2			

प्रस्तुत बंदिश द्रुत-तीनताल में निबद्ध है। छोटी-छोटी तानों के माध्यम से शब्दों का भाव स्पष्ट किया गया है। चूँकि यह चंचल प्रकृति के राग की श्रेणी में रखा जाता है। शायद इसी कारण 'रामदास' जी ने इस बंदिश की रचना इस प्रकार की होगी। वादी स्वर के रूप में मध्यम की प्रमुखता से प्रयोग बंदिश की प्रत्येक पंक्ति में दृष्टिगोचर हो रहा है। निषाद स्वर शुद्ध होने से यह राग मालकौंस के समीप नहीं जा सकता। अतः प्रस्तुत बंदिश में शुद्ध निषाद का बारम्बार प्रयोग देखा जा सकता है।

(ड.) राग-बसंत (एकताल)

स्थाई- सरस रंग फूल रहे, बगियन फुलवारी आली,
ऋतु बंसत आयो सखी, बोल रही कोयलिया।

अंतरा- 'रामदास' साजन बिन, जियरा नहीं धरत धीर,
आवो हरि बेगि मोहे, दरस तो दिखाये जावो।।

स्थायी

सां	सां	नि	ध	प	प	प	-	म	ग	म	ध				
स	र	स	रं	ऽ	ग	फू	ऽ	ल	र	हे	ऽ				
x		0		2		0		3		4					
नि	सां	नि	ध	म	ध	धसां	-	नि	ध	म	ध				
द	र	स	तो	ऽ	दि	खाऽ	ऽ	ये	जा	ऽ	वो				

प्रस्तुत बंदिश राग बंसत, ताल-एकताल में निबद्ध है। यह बनारस घराने की प्रचलित बंदिशों में से एक है। इस राग में तार 'सां' अधिक चमकता है। इसलिए प्रस्तुत बंदिश की उठान तार षड्ज से ही किया गया है। इस बंदिश में आरोह में 'सा' के बाद 'ग' एवं 'ध' के बाद तार 'सां' प्रयोग किया गया है, जो कि राग नियमानुसार उचित है। स्थायी की तीसरी पंक्ति में

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

ललित अंग का बहुत ही सुन्दर प्रयोग किया गया है। यथा-सा म म म ग इस प्रकार शब्द के साथ स्वरों के सामंजस्य से बसंत ऋतु के आगमन का मनमोहक दृश्य देखा जा सकता है।

पंडित रामदास द्वारा रचित रचनाओं में वर्णित अलंकार

(क) अनुप्रास अलंकार

राग हिडोल (झपताल)

स्थायी- धीर धरनी धरत, सूर करनी करत,

भक्त भव सों तरत, वीर कुछ ना डरत।

अन्तरा- रामदास अब तो शंकर शरण आये हैं,

रहत निसदिन सदा प्रभू के पाँय न परत।

प्रस्तुत रचना में अनुप्रास अलंकार के दर्शन होते हैं। अनुप्रास अलंकार में एक या दो वर्ण की बार-2 पुनरावृति होती है। इस आधार पर बंदिश की पहली पंक्ति में 'ध' एवं 'त' वर्ण, दूसरी में 'र' वर्ण तथा तीसरी पंक्ति में 'भ' एवं 'त' वर्ण की आवृति हैं एवं चारों पंक्तियों का अंतिम वर्ण 'त' है।

(ख) उपमा अलंकार

राग मुल्तानी (एकताल)

स्थायी- सुंदर मुख चंद्र तेरो मोहनी भरी

अन्तरा- कुंजन में करत रास

ग्वाल बाल संग लिए,

'रामदास' चारों नयन कमल पंखुडी।

दो पदार्थों में सादृश्य-प्रतिस्पादन करने को उपमा कहते हैं। 'सुंदर मुख चंद्र तेरो' में मुख की तुलना चन्द्रमा से की गई है। 'कुजन' (वृक्षों एवं लताओं आदि से ढ़का हुआ स्थान) में ग्वाल-बाल के साथ रास कर रहे हैं। अन्तरे में चारों नयन (बाहर और भीतर के) की तुलना कमल की पंखुडियों से की गई है। अतः उपमा अलंकार में सुन्दर वर्णन किया गया है।

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं कि पंडित बडे रामदास मिश्र का संगीत जगत को दिया गया योगदान अविस्मरणीय है। जहाँ एक तरफ ख्याल में प्रयोग की जाने वाली बंदिशों में निम्न स्तर के श्रृंगार रस की झुठी चासनी में लिपेट साहित्य का प्रयोग करके लोग वाह-वाही लूट रहे थे, वहीं दूसरी तरफ पंडित बडे रामदास मिश्र ने ख्याल की बंदिशों में आध्यात्मिकता का रंग शामिल किया। जिस प्रकार भगवान शिव को राम नाम अत्यंत प्रिय है, उसी प्रकार अपने नाम के अनुरूप पंडित बड़े रामदास मिश्र ने भगवान श्री राम का गुणगान करते हुए बंदिशों की रचना की। इसका एक साकार उदाहरण है-तीन ताल में निबद्ध राग पुरिया धनाश्री में निबद्ध बंदिश-'सुमिरन कर राम नाम को' इसी प्रकार इनके द्वारा रचित भगवान शंकर को

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

समर्पित राग शंकरा की बंदिश-'शंकर हो दया करो हम पर त्रिपुरारी' प्रसिद्ध रही है। आदि शक्ति जगदम्बा भवानी' ये बंदिश माँ शक्ति की आराधना का सशक्त माध्यम है।

संदर्भ ग्रन्थ

गर्ग, लक्ष्मीनारायण (1984). हमारे संगीत रत्न. संगीत कार्यालय, चतुर्थ संस्करण, हाथरस।

चन्द्र, मोती (1962). काशी का इतिहास. हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राईवेट लिमिटेड, मुम्बई।

जौहरी, रेनू (2004). भारतीय सांगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान. क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली।

मिश्र, कामेश्वर नाथ (1997). काशी की संगीत परम्परा. भारत बुक्स, प्रथम संस्करण, लखनऊ।

मिश्र, शम्भुनाथ (2002). हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा. प्रकाशन विभाग, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली।